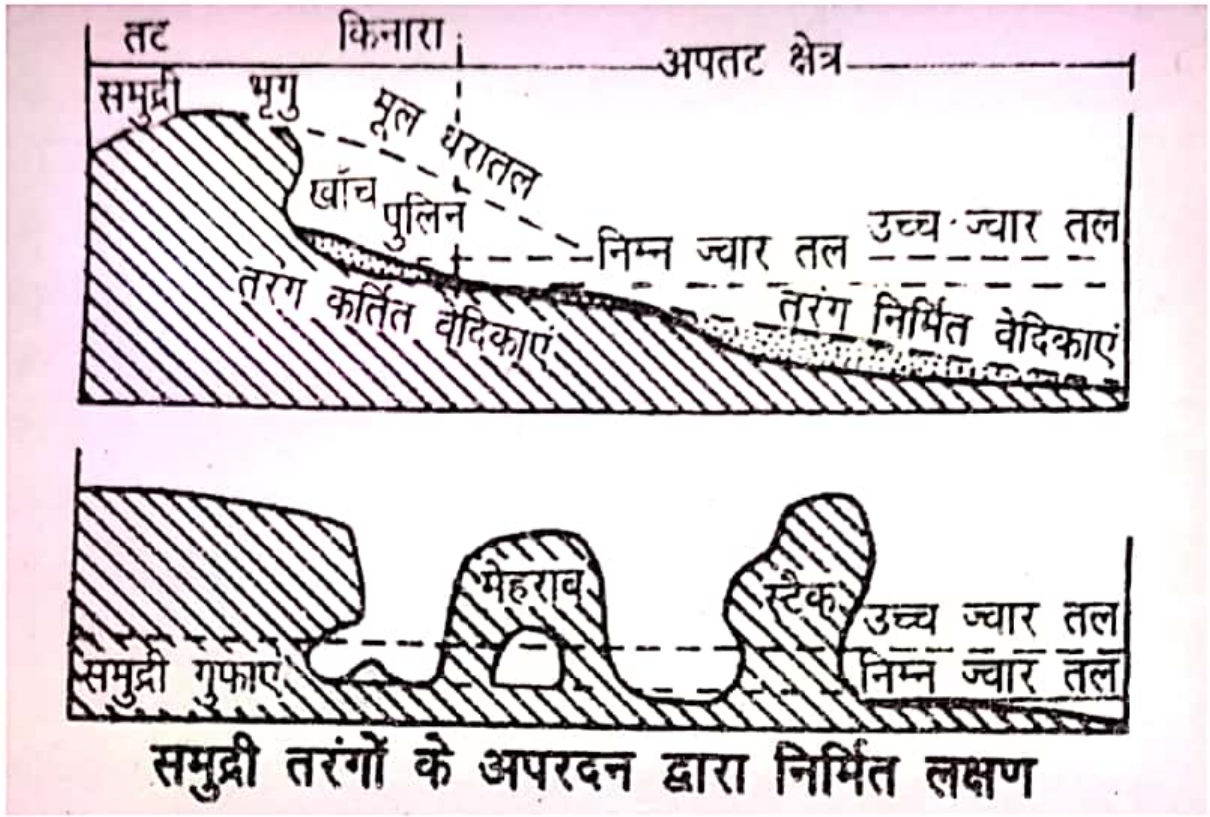


## सागरीय जल से निर्मित स्थलाकृति

धरातल पर स्थलाकृतियों के विकास से सम्बंधित अन्य कदमों की भाँति महासागरीय तरंगों, सुनामी आदि द्वारा भी स्थलाकृतियों का निर्माण किया जा सकता है। इनका अपरदन कार्य जलगत क्रिया, अपवर्षण, सन्निकर्षण, व्युत्पन्न क्रिया एवं जलदाब की क्रिया के माध्यम से सम्पन्न होता है। तटीय भागों में इनके द्वारा निर्मित मुख्य अपरदनात्मक स्थलाकृतियों निम्नलिखित हैं।

① तटीय भूगड (Coastal cliffs) → जब कोई सागरीय तरंग लटक सीधा रखा होता है, तब इसे तटीय भूगड कहा जाता है। प्रारंभ में सागरीय तरंग समुद्री जलस्तर पर तटीय चट्टान में एक खाँच (Notch) का निर्माण करती है, जो धीरे-धीरे चौड़ी एवं गहरी होती जाती है। इसका आधार तब तक ढलना जाता है और तरंगों आकार भूमी को तब तक खोखला करती रहती है, जब तक की चट्टान का उपरी भाग तिरछे गिरकर धराशाही नहीं हो जाता है। इसके गिर जाने पर लगातार तरंगों का निरन्तर आक्रमण होने रहने से यह पीछे खिसकना प्रारंभ होता है।

② तटीय कन्हरा (Coastal caves) → अवरोधी अथवा बन्द चट्टानों की अपेक्षा कमजोर चट्टानों का अपरदन तरंगों द्वारा तेजी से किया जाता है। चट्टानों के बीच में जहाँ अंधियाँ, अंधा एवं कमजोर चट्टानों के संस्तर विद्यमान होते हैं, वहीं तरंगों का विशिष्ट अपरदन कन्हराओं का निर्माण करता है। तटीय क्षेत्र में अंधियाँ कन्हराओं का निर्माण वहीं सम्भव हो पाता है, जहाँ उपर की चट्टान इतनी दृढ़ एवं मजबूत होती है कि आधार के खोखले हो जाने पर भी बिना किसी सहारे के खिंची रह सकती है।



③. प्राकृतिक मेहराब (Natural Arch) → जब समुद्र की ओर आगे बढ़े हुए चट्टानी भाग पर दो विपरीत दिशाओं से तरंगों का आघात होता है, तो उसके दोनों ओर कन्दारों का निर्माण प्रारंभ हो जाता है। जब कन्दारों आपस में मिल जाती हैं तो प्राकृतिक मेहराब बन जाता है। इसका निर्माण की खूबी जगह से आसपास देखा जा सकता है।

④. स्टैक (Stack) → कन्दारों के मिलने से बने प्राकृतिक मेहराबों की प्रकृति अस्थायी होती है। जब मेहराब ध्वस्त हो जाता है, तो चट्टान का अगला भाग समुद्री जल से बीच एक स्तम्भ बचा रह जाता है, जिसे स्टैक कहते हैं।

समुद्री तरंगों द्वारा अपरदिन पहाचों और नदियों तथा हिमालयों द्वारा समुद्र में डाले गए अवसादों का तरंगों एवं आटाओ द्वारा पुनः निक्षेपण कर लिया जाता है। तटीय भागों में होने वाली निक्षेपण की इस क्रिया से अनेक विशिष्ट स्थलाकृतियों का निर्माण होता है। सागरीय जल की निक्षेपण प्रभाव स्थलाकृति निम्नलिखित हैं:-

①. उलिन (Beach) → सागर तटीय भागों में भाटा-पत्थर और समुद्र तटीय रेखा के मध्य बालू, बजरी, गोलेशु, आदि पहाचों के अस्थायी जमाव से बनी स्थलाकृति को पुलिन कहा जाता है। कमजोर तरंगों की क्रिया की अवस्था में तो इसका आकार विस्तृत होता है, किन्तु जब बड़ी बूझानी तरंगें आने लगती हैं तो ये निक्षेपण अवसाद सागरों में बहा लिए जाते हैं।

②. सैबिका (Bars) → समुद्री तरंगों एवं आटाओ द्वारा समुद्र के तल पर बालू एवं बजरी आदि पहाचों के निक्षेपण से बनाये गए कटकों अथवा बाँधों को सैबिका के नाम से जाना जाता है।

(3). रौप्य (Basinoids) → रौप्य का निर्माण भी सागरतटीय भागों में रौप्य की भांति होगा, किन्तु इसी इंचाई रौप्य से अधिक होगी है। रौप्य हमेशा जल के अन्दर डूबी रहती है अथवा उच्च ज्वार आने से समय-समय में अवश्य डूब जाती है जबकि रौप्य सदैव जल के ऊपर ही रहता है।

(4). स्फिट (Spit) → स्फिट अक्सर द्वीपों के निक्षेपण से बनी यह लम्बाइय होती है, जिसका आकार कटर अथवा बाँध की भांति होता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि इसका एक सिरे तर से जुड़ा होता है जबकि दूसरा सारा ही ओर होता है।

(5). डुंड (Mook) → जब कोई स्फिट सागरतटीय जल में अन्दर की ओर जाने के बाद तरंगों के द्वारा बंधे पर पहाचों से जमान से एउ डुंड का आकार कारण कर लेगी है, जिसका मुख तर की ओर होता है, तब ऐसी स्थलाइय डुंड कही जाती है। इसका आकार प्रायः अंडुष की भांति होता है।

(6). संघोजक रौप्य (Symbiotic Reef) → दो स्थानों पर अथवा किसी द्वीप को तरंगों से जोड़ने वाली रौप्य की संघोजक रौप्य बन्ने हैं। यह स्थानों काफी बड़े आकार में होता है। जल रसिक होने से स्पन्दभावा से मिल जाते हैं जो उन्हें द्वारा बंधे हुए क्षेत्र में समुद्री खारे जल वाली बैंगून भित्तों का निर्माण हो जाता है। जब यह दो स्थानों को मिलती है तो संघोजक रौप्य कहलाती है। जबकि तरंग से किसी द्वीप अथवा शीपिल्यन से किसी द्वीप को मिलाने वाली रौप्य को विशिष्ट नाम 'संघोजक' से जाना जाता है।

(8). तट रेखा (Coast Line) → समुद्र तल और समुद्री किनारे के मध्य की सीमा रेखा को तटरेखा कहते हैं। यह रेखा समुद्र की धार समुद्र तट का निर्माण करती है। समुद्री तरंगों द्वारा तट रेखा से निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। समुद्री तट पर अधिक अपरोक्षी चट्टानों से अंतरीप तथा कम अपरोक्षी चट्टानों से खाड़ियों का निर्माण होता है।

तट रेखाओं के निम्न मुख्य प्रकार हैं :

- (9). फिरोड तट → किसी क्षितीकृत उच्चभूमि के सागरीय तल के नीचे अंशतः खँस जाते हैं फिरोड तट का निर्माण होता है। इनके किनारे, खड़ी दीवार के समान होते हैं। नार्वे का तट फिरोड तट का सुन्दर उदाहरण है।
- (10). रिखा तट → नदियों द्वारा अपरक्षित उच्चभूमि के खँस जाने से रिखा तट का निर्माण होता है। यह 'V' आकार की घाटी तथा समुद्र किनारे वाली होती है। इसी तरह से समुद्र की धार अराक बढ़ती जाती है। एशियाई महाद्वीप के पठार का उत्तरी भाग रिखा तट का अच्छा उदाहरण है।
- (11). डॉल्मेरिया तट → सामान्यतः पर्वतीय कटवों वाले तटों के खँसने से डॉल्मेरिया तट का निर्माण होता है। अर्थात् महाद्वीप का डॉल्मेरिया तट इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।
- (12). निर्मित समुद्र तट → हवेलियों के उपर या समुद्री जलस्तर के नीचे खिलने से निर्मित समुद्र तट का निर्माण होता है। इस प्रकार के तट पर लिपट लैंगून, पुलिन, मिल्फ और मेहराब मिलते हैं। भारत में गुजरात का काठियावाड़ तट निर्मित समुद्र तट का अच्छा उदाहरण है।